अकबर की राजपूत नीति

मुगल शासक अकबर ने राजपूतों के प्रति एक नई नीति अपनाई जो पहले से चले आ रहे संघर्ष के विपरीत सद्भाव मैत्री और सहयोग की भावना से प्रेरित थी। इससे मुगल साम्राज्य और राजपूतों के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का नया अध्याय आरंभ हुआ।

अकबर जब शासक बना, उस समय उसके समक्ष चार चुनौतियाँ थीं, प्रथम मुगलों की सत्ता को अफगानों द्वारा प्रस्तुत चुनौती का अंत करना, द्वितीय मुगल साम्राज्य का विस्तार, तृतीय मुगल सामन्त वर्ग में उजबेकों की उदण्डता पर अंकुश लगाना एवं चतुर्थ भारत की बहुसंख्यक हिन्दू प्रजा के बीच मुगल शासन को लोकप्रिय बनाना। अकबर ने यह महसूस किया कि इन चुनौतियों से निपटने में राजपूतों का सहयोग महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है। निश्चय ही मुगलों एवं राजपूतों की मिली जुली शक्ति का सामना करना अफगानों के लिए कठिन था। राजपूताना के क्षेत्र भौगोलिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण था और यहाँ मुगलों की सत्ता बनाये बिना पश्चिम एवं दक्षिण की ओर साम्राज्य विस्तार संभव नहीं था। उजबेकों पर अंकुश लगाकर सम्राट की सत्ता को सुदृढ़ बनाया जा सकता था। चूँकि राजपूत भारत के शासक वर्ग थे इसलिए उनका सहयोग प्राप्त कर भारत की शेष हिन्दू प्रजा का भी सहयोग एवं समर्थन आसानी से प्राप्त किया जा सकता था।

उपरोक्त चुनौतियों के आलोक में अकबर ने राजपूतों के प्रति एक नई नीति का अनुसरण करना आवश्यक समझा जो वस्तुतः दण्ड और पुरस्कार की नीति थी।

इस नीति का आरंभ 1562 ई० में आमेर के राजा भारमल के साथ संधि द्वारा हुआ। राजा भारमल को अपने ही सम्बन्धियों से चुनौती मिल रही थी जिसे पड़ोसी मुगल गवर्नर द्वारा सहयोग दिया जा रहा था। अकबर जब अजमेर की यात्रा पर था तब भारमल ने उससे रास्ते में भेंट की तथा मैत्री सम्बन्धों की स्थापना का प्रस्ताव रखा। अकबर ने सहर्ष इसे स्वीकार कर लिया। आगे इस सम्बन्ध को मजबूती देने के लिये भारमल ने अपनी पुत्री की शादी अकबर से कर दी। 1563 ई० में अकबर ने मेड़ता के दुर्ग पर अधिकार कर लिया जो मारवाड़ की सीमा पर स्थित था। इसके बाद कुछ समय तक अकबर ने राजपूताना के क्षेत्र में कोई कारवाई नहीं की।

1567 ई० में अकबर ने फिर राजपूताना की ओर ध्यान दिया और चित्तौड़ पर आक्रमण किया। कई महीने संघर्ष के बाद 1568 ई० में चित्तौड़ पर मुगलों का अधिकार हो गया, लेकिन राणा उदय सिंह द्वारा मुगलों का विरोध जारी रहा। 1569 ई० में अकबर ने रणथंभौर पर अधिकार कर लिया। इन विजयों से अभिभूत होकर कई छोटे छोटे राजपूत राज्य जैसे बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर, आदि ने अकबर के आगे आत्मसमर्पण कर दिया।

1576 ई० में अकबर ने मेवाड़ के नये शासक राणा प्रताप के विरुद्ध हल्दीघाटी की लड़ाई लड़ी। राणा प्रताप युद्ध में पराजित होने पर भी अकबर का विरोध जारी रखा। अकबर के जीवन काल में मेवाड़ का राज्य मुगलों के अधीन नहीं आ सका। फिर भी राणा प्रताप के हार से बूंदी, कोटा, ओरछा, बांसवाड़ा, डूंगरपुर आदि राज्यों ने मुगलों के आगे आत्म समर्पण कर दिया।

इस तरह अकबर के काल में 1578 तक

राजपूताना का अधिकांश क्षेत्र मुगल साम्राज्य के प्रभाव में आ चुका था। अकबर की राजपूत नीति पर अब हम समग्र दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि उसने राजपूत शासकों के प्रति एक सुनिश्चित नीति का अवलम्बन किया। उसने सन्धि स्वीकार करने वाले राजपूत शासकों पर निम्नलिखित शर्तें आरोपित की –

(क) मुगल सम्राट की संप्रभुता को स्वीकार करना,
(ख) निर्धारित वार्षिक नजराना देना,
(ग) सैनिक सेवा प्रदान करना,
(घ) अन्य राज्यों के साथ संघर्ष की स्थिति में मुगल सम्राट की मध्यस्थता स्वीकार करना,
(ङ) संधि को भंग नहीं करना, आदि

इसके बदले में राजपूत शासकों को निम्नलिखित सुविधायें एवं आश्वासन अकबर ने दिये –

(क) शासक एवं उसके वंश की रक्षा का आश्वासन,
(ख) राज्य की सीमा पर मुगलों द्वारा आक्रमण न करने का आश्वासन और किसी अन्य शक्ति के आक्रमण से भी सुरक्षा का आश्वासन,
(ग) मुगल सेना एवं प्रशासनिक सेवा में बिना पक्षपात के प्रतिनिधित्व,
(घ) धार्मिक एवं सांस्कृतिक मामले में अहस्तक्षेप

अकबर ने राजपूतों के साथ मन्त्री सम्बन्धों को मजबूत बनाने के लिये उनके साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये। लेकिन यह अनिवार्य शर्त नहीं था क्योंकि जिसने इसमें अभिरुचि नहीं दिखायी इसके लिये बाध्य नहीं किया। इसका उदाहरण था रणथम्भौर के हाड़ा राजवंश। सम्बन्धों को मजबूती देने के लिये अकबर ने राजपूतों को कई प्रकार की सुविधायें प्रदान की।

उदाहरण के लिये केवल राजपूत राजाओं एवं सरदारों को यह अधिकार प्राप्त था कि वे अपने अधीन केवल राजपूत मनसबदारों को सेवा में रखें। वतन जागीर के रूप में वंशानुगत भूमि अनुदान केवल उन्हें ही प्राप्त था। साम्राज्य में इन्हें बड़े पद भी प्राप्त हुये जैसे अकबर के समय राजा भारमल एवं राजा मानसिंह को अति महत्वपूर्ण पद प्राप्त होना।

अकबर की राजपूत नीति से राजपूतों को काफी लाभ हुआ। राजपूताना का क्षेत्र मुगलों के प्रभाव में आने से शेष उत्तरी भारत के घनिष्ठ सम्पर्क में आया जिससे इस क्षेत्र में आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ। मुगल सेवा में सम्मिलित होकर राजपूत मनसबदार सारे भारत में फैल गये और उनका राजनीतिक एवं मानसिक क्षितिज का विकास हुआ। सबसे उल्लेखनीय लाभ यह हुआ कि शासक वर्ग के स्तर पर संघर्ष एवं टकराव की स्थिति समाप्त हुई तथा सामंजस्य एवं सहयोग की परम्परा आरंभ हुई जिसके रचनात्मक प्रभाव भारतीय राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर पड़े।

इस तरह हम देखते हैं कि अकबर की राजपूत नीति पूर्णतः सफल सिद्ध हुई तभी तो इसे अकबर की कूटनीतिक प्रतिभा का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण माना जाता है। अकबर राजपूतों के महत्व को समझा तथा उनका सहयोग प्राप्त करने हरसंभव प्रयास किया। उसने राजपूतों के प्रति उदारता का परिचय देकर उन्हें अपना भक्त बना लिया, जिससे उसके राजनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति आसान हुई। राजपूतों के सहयोग से न केवल अफगानों के विरोध की समस्या समाप्त हो गई बल्कि साम्राज्य विस्तार तीव्र गति से हुआ तथा भारत में मुगल साम्राज्य को एक सुदृढ़ आधार प्राप्त हुआ।

-०-